

‘हृदय-प्रशांत क्षेत्र’ में यूरोपीय संघ की भूमिका

यह एडिटरियल 09/10/2021 को ‘इंडियन एक्सप्रेस’ में प्रकाशित “How Delhi came to see Europe as a valuable strategic partner” लेख पर आधारित है। इसमें हृदय-प्रशांत क्षेत्र में यूरोपीय संघ के प्रवेश से संबंधित प्रगति और समीकरणों की चर्चा की गई है।

संदर्भ

यूरोपीय संघ (European Union- EU) हृदय-प्रशांत क्षेत्र (Indo-Pacific) में घनिष्ठ संबंधों के निर्माण और अपनी मजबूत उपस्थिति पर जोर दे रहा है, जो कि हृदय-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग हेतु यूरोपीय संघ की रणनीति से स्पष्ट हो जाता है।

‘यूरोपीय आयोग’ के अध्यक्ष ने राय प्रकट की है कि “यदि यूरोप को अधिक सक्रिय वैश्विक प्रतिनिधि बनना है, तो उसे अगली पीढ़ी की भागीदारियों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।” हृदय-प्रशांत रणनीति के अलावा, यूरोपीय संघ चीन के ‘बेल्ट एंड रोड इनशिएटिवि’ (BRI) के साथ प्रतिस्पर्धा करने हेतु ‘ग्लोबल गेटवे’ (Global Gateway) योजना शुरू करने पर भी विचार कर रहा है।

हाल ही में, जर्मनी, फ्रांस और नीदरलैंड जैसे सभी सदस्य देशों ने हृदय-प्रशांत की अवधारणा को अपनाना शुरू कर दिया है और इसे अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतियों के साथ एकीकृत भी कर रहे हैं। हृदय-प्रशांत को एक रणनीतिक अवधारणा के रूप में अपनाने के लिये यूरोपीय संघ को प्रेरित करने में इन्हीं सदस्य देशों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

यूरोपीय संघ की हृदय-प्रशांत रणनीति

- **संवहनीय आपूर्ति शृंखला:** हृदय-प्रशांत भागीदारों के साथ इस संलग्नता का प्राथमिक उद्देश्य अधिक प्रत्यास्थ और संवहनीय वैश्विक मूल्य शृंखलाओं का निर्माण करना है।
- **समान विचारधारा वाले देशों के साथ साझेदारी:** ऐसा प्रतीत होता है कि यूरोपीय संघ की रणनीति वर्तमान में हृदय-प्रशांत क्षेत्र में पहले से स्थापित साझेदारियों को और सुदृढ़ करने तथा समान विचारधारा वाले देशों के साथ नई साझेदारियाँ विकसित करने पर अधिक केंद्रित है, ताकि हृदय-प्रशांत क्षेत्र में उसकी भूमिका और बढ़ती उपस्थिति सुनिश्चित हो सके।
- **‘क्वाड’ (Quad) सदस्यों के साथ सहयोग की इच्छा:** यूरोपीय संघ ‘क्वाड’ सदस्य देशों के साथ जलवायु परिवर्तन, प्रौद्योगिकी और वैक्सीन जैसे विषयों में सहयोग की इच्छा रखता है।
 - इसके अतिरिक्त, पश्चिमी-प्रशांत क्षेत्र में चीन की वसतिवादी प्रवृत्तियों और हृदय महासागर में इसके बढ़ते प्रभाव को देखते हुए यूरोपीय संघ हृदय-प्रशांत क्षेत्र में ‘क्वाड’ देशों के साथ सहयोग को महत्वपूर्ण मानता है।
- यूरोपीय संघ, एशिया में एक बड़ी भूमिका निभाने, अधिक उत्तरदायित्व का वहन करने और इस भू-भाग के मामलों पर एक प्रभाव रखने की आवश्यकता महसूस करता है, क्योंकि एशिया का भविष्य यूरोप के साथ संबद्ध है।
- रक्षा और सुरक्षा यूरोपीय संघ की हृदय-प्रशांत रणनीति के महत्वपूर्ण तत्व हैं, जिसका उद्देश्य सुरक्षा संचार, क्षमता निर्माण एवं इंडो-पैसिफिक में नौसैनिक उपस्थिति के माध्यम से एक ‘स्वतंत्र एवं नयिम-आधारित क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना को बढ़ावा देना है।

यूरोपीय संघ के लिये हृदय-प्रशांत क्षेत्र का महत्त्व

- महज़ छह मलियन आबादी वाले डेनमार्क जैसे देश का भारत के साथ एक महत्वपूर्ण हरित साझेदारी स्थापित करना इस बात की पुष्टिकरता है कि यूरोप के छोटे-छोटे देश भी भारत के आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक परिवर्तन में बहुत कुछ योगदान कर सकते हैं।
 - छोटे से देश- ‘लक्ज़मबर्ग’ में भी व्यापक वित्तीय शक्ति मौजूद है, वहीं ‘नॉर्वे’ भारत को प्रभावशाली समुद्री प्रौद्योगिकियाँ प्रदान कर सकता है, एस्टोनिया एक महत्वपूर्ण साइबर शक्ति है, ‘चेक रिपब्लिक’ ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में एक मजबूत शक्ति है, पुर्तगाल ‘लुसोफोन’ (Lusophone) भू-भाग में प्रवेश का एक द्वार बन सकता है, जबकि स्लोवेनिया ‘कोपेर’ में अवस्थित अपने एड्रियाटिक समुद्री बंदरगाह के माध्यम से यूरोप के मुख्य क्षेत्र तक वाणिज्यिक पहुँच प्रदान करता है।
 - अब जब भारत इन संभावनाओं को समझने लगा है तो 27 देशों के यूरोपीय संघ के साथ नए रास्ते भी खुलने लगे हैं।
- व्यापार और निवेश के मामले में यूरोपीय संघ और हृदय-प्रशांत नैसर्गिक भागीदार क्षेत्र हैं।
 - हृदय-प्रशांत क्षेत्र में यूरोपीय संघ शीर्ष निवेशक, विकास सहयोग का अग्रणी प्रदाता और सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक है।
 - माल और सेवाओं के वैश्विक व्यापार में हृदय-प्रशांत तथा यूरोप संयुक्त रूप से 70% से अधिक की हिस्सेदारी रखते हैं और प्रतिवर्ष वृद्धिशील निवेश प्रवाह में उनकी हिस्सेदारी 60% से अधिक है।

- हृदय-प्रशांत और यूरोप के बीच व्यापारिक आदान-प्रदान वशिव के कसलल भी अनूय भौगोलिक कषेत्रों की तुलना में काफी अधक है ।
- हृदय-प्रशांत कषेत्र में 'मलकका जलडमरूमध्य', 'दकषणल चीन सागर' और 'बाब अल-मंदेब जलडमरूमध्य' जैसे वशिव के कुछ प्रमुख जलमार्ग मौजूद हैं जो यूरोपीय संघ की व्यापारिक गतवधलधियों के लयल भारी महत्त्व रखते हैं ।

यूरोपीय संघ की हृदय-प्रशांत रणनीतिके प्रभाव

- **कषेत्रीय सुरकषा में योगदान:** व्यापक भू-राजनीतिके पहुँच के साथ एक मज़बूत यूरोप भारत के लयल बेहद अनुकूल है । भारत इस बात से अवगत है कल यूरोप हृदय-प्रशांत कषेत्र में अमेरलकी की सैनूय कषमता की बराबरी नहीं कर सकता । लेकनल यह सैनूय संतुलन को सुदृढ़ करने और कई अनूय तरलकों से कषेत्रीय सुरकषा के लयल योगदान करने में उललेखनीय सहायता कर सकता है ।
 - यूरोप हृदय-प्रशांत कषेत्र में भवषिय के परणलमों को प्रभावतल कर सकने की भारत की कषमता में उललेखनीय रूप से वृद्धल कर सकता है । यह ऑस्ट्रेलया, जापान और संयुक्त राजू अमेरलकी के साथ भारत के 'कवाड' गठबंधन के लयल एक मूलूयवान पूरकता भी प्रदान कर सकता है ।
- **वकलस अवसंरचना के साथ सैनूय सुरकषा:** यूरोपीय संघ की हृदय-प्रशांत रणनीतलका इस कषेत्र पर सैनूय सुरकषा की तुलना में कहीं अधकल त्वरतल और व्यापक वषियों तक वसलतृत प्रभाव पड़ने की संभावना है ।
 - इसमें व्यापार और नवलश से लेकर हरतल भागीदारी तक, गुणवत्तापूरण अवसंरचना नरलमाण से लेकर डजलटल भागीदारी तक और कषेत्रीय शासन को सुदृढ़ करने से लेकर अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने तक ववधल वषिय शामिल हैं ।
- **बहुधरुवीय वशिव:** अमेरलकी और चीन के बीच गहरे होते संघर्ष के कारण दकषणल पूरव एशया के लयल घटती संभावनाओं के परदृश्य में यूरोप को एक महत्त्वपूरण शकतलके रूप में देखा जा रहा है, जो इस भूभाग के लयल व्यापक रणनीतिके वकललुपों के दवार खोल सकता है ।
 - भारत में भी यही दृषटकलण मौजूद है, जो अब यूरोपीय संघ को एक बहुधरुवीय वशिव के नरलमाण के लयल एक महत्त्वपूरण तत्व के रूप में देखता है ।

संबद्ध मुद्दे

- कुछ एशयाई देश यूरोप को रणनीतिके संदेह की दृषटकल से देखते हैं, जबकल कई अनूय देश उसे एक मूलूयवान भागीदार के रूप में देखते हैं ।
- कई ऐसे अनूय आसनन मुद्दे भी हैं जनलका भारत-प्रशांत कषेत्र सामना कर रहा है और जो यूरोपीय देशों के स्वयं के सुरकषा हतलियों पर प्रभाव डाल सकते हैं, जैसे उभरती प्रौद्योगकलतियों के संभावतल जोखमल, आपूरतल शृंखला लचीलेपन को सुनशलचितल करना और दुषप्रचार का मुकाबला करना ।
- इस कषेत्र की सीमतल संयुक्त सैनूय कषमताओं और अमेरलकी पर नरलतर नरलभरता को देखते हुए, सुरकषा एजेंडे के सैनूय आयाम को अभी तक गहराई से नहीं समझा गया है ।
 - संयुक्त सैनूय अभूयासों, नौवहन की स्वतंत्रता सुनशलचितल करना और समुद्री डकैतल से नपलटने जैसे अनूय वषिय भी महत्त्वपूरण हैं, जहाँ फ्रॉंस और जर्मनी हृदय-प्रशांत कषेत्र के अनूय देशों के साथ संयुक्त सैनूय अभूयास में पहले भी संलगन हो चुके हैं ।

आगे की राह

- यूरोपीय संघ के सदसूय देशों को चीन के साथ और इस कषेत्र के भीतर अपनी संलगनता को बेहतर सामंजतल करने की आवश्यकता है और इस वषिय में यूरोपीय संघ की भूमकल को और परषिकृत कया जाना चाहयल ।
- भागीदारों के साथ यूरोपीय संघ के सहयोग का सुदृढ़ होना आवश्यक है और इसे एक वैकलुपकल संवहनीय मॉडल के रूप में अपना महत्त्व प्रदर्शतल करना होगा ।
- यदल यूरोपीय संघ हृदय-प्रशांत कषेत्र में अपने व्यापक दृषटकलण को आगे बढ़ाना और इसका नेतृत्व करना चाहता है, तो भारत, आसयान, जापान, ऑस्ट्रेलया और बरतलन के साथ एक सुसंगत एवं समन्वतल कार्रवाई ही एकमात्र वकललुप है ।
- डजलटल कनेक्टवतल को बढ़ावा देने हेतु संयुक्त परयोजनाओं को कारूयानवतल करना इस दशल में पहला कदम हो सकता है ।

नषिकरष

भारत को हृदय-प्रशांत कषेत्र में यूरोपीय संघ के प्रवेश का स्वागत करना चाहयल, कूयोंकल यूरोप अपने व्यापक आरूथकल प्रभाव, प्रौद्योगकलीय कषमता और नयामक शकतलके साथ एक बहुधरुवीय वशिव और एक पुनरसंतुलतल हृदय-प्रशांत का वादा कर सकता है जो स्वयं भारत की इच्छाओं और आवश्यकताओं के अनुकूल है ।

भारत की रणनीतलमें "अमेरलकी को संलगन करना, चीन पर नयलंतरण रखना, यूरोप के लयल अवसर बनाना, रूस को आश्वस्त करना, जापान को एक हसलसेदार बनाना शामिल है । आवश्यकता यह भी है कल यूरोप के लयल अवसर के नरलमाण के तरलकों पर ज़ोर दया जाए ।

अभूयास प्रश्न: हृदय-प्रशांत कषेत्र में यूरोपीय संघ की संलगनता सैनूय संतुलन को सुदृढ़ करेगी और साथ ही कषेत्रीय सुरकषा में योगदान करेगी । चरूचा कीजयल ।

